परम्पराएँ और सामाजिक-आर्थिक परिप्रेक्ष्य

अमलान बिस्वास

जनजाति यानी 'ट्राइब' शब्द की व्युत्पत्ति रोमन से हुई है जो लैटिन शब्द 'ट्राइब्स' से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'ग़रीब'। इसका उपयोग रोमन समाज में जनसमूह को निर्दिष्ट करने के लिए किया जाता था। सोलहवीं शताब्दी में, पूर्वजों से वंश के दावे में एक समुदाय को निरूपित करने के लिए अँग्रेज़ी उपयोग में इसे लोकप्रियता मिली। इसके बाद, इसका उपयोग औपनिवेशिक नृवंशविज्ञान और नृविज्ञान में, 'पृथक कुलीन जंगली समुदाय' को नामित करने के लिए किया गया था, जो पूरी तरह सादगी में रहते थे। भारत में जनजातीय समुदाय पंजाब, हरियाणा तथा दिल्ली राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों- चंडीगढ़ तथा पुदुच्चेरी को छोड़कर देश के सभी हिस्सों में निवास करते हैं। वे भारत की कुल आबादी का 8.6 प्रतिशत हैं और लगभग सात सौ समुदायों में वर्गीकृत हैं जिनमें 'प्रमुख जनजातियाँ' और 'उप-जनजातियाँ' दोनों शामिल हैं।

भारत में कुल जनजातीय जनसंख्या की लगभग 12 प्रतिशत आबादी पूर्वोत्तर राज्यों में रहती है। मध्य भारतीय राज्यों, जहाँ जनजातीय आबादी अल्पसंख्यक है, उसके विपरीत मिज़ोरम, मेघालय और नगालैंड में जनजातीय समुदाय राज्य की कुल आबादी का अस्सी प्रतिशत से अधिक है। वास्तव में, एनईआर (पूर्वोत्तर क्षेत्र), कम से कम 133 अनुसूचित जनजाति समूहों का घर होने के कारण अपनी अलग पहचान रखता है। ये भारत[1] में वर्तमान में पहचाने जाने वाले कुल 659 ऐसे विशिष्ट समूहों में शामिल हैं। हालांकि, यह देखा जा सकता है कि त्रिपुरा में जनजातीय आबादी 1951 की 56 प्रतिशत से घटकर 2001 में 30 प्रतिशत से भी कम हो गई। अरुणाचल प्रदेश में, जनजातीय आबादी 1951 की 90 प्रतिशत से घटकर 1991 में 64 प्रतिशत से भी कम हो गई। बोडो, असम का एक समतल भूमि जनजातीय समुदाय, बोडोलैंड क्षेत्रीय क्षेत्र के कई इलाकों में अल्पसंख्यक बन गया है।

पारिस्थितिकी और निवासी

यह व्यापक रूप से ज्ञात है कि अशांत माहौल और भू-राजनीति से ग्रसित होने के कारण पूर्वोत्तर क्षेत्र भारतीय उपमहाद्वीप का पिछड़ा और कम विकसित क्षेत्र बना हुआ है, हालांकि यह देश के 7.9 प्रतिशत भौगोलिक क्षेत्र में फैला है। शानदार पहाड़ियों, गहरी घाटियों, अस्थिर नदियों तथा नालों, लहरदार भूमि, उपजाऊ घाटियों और विविध वनस्पतियों तथा जीवों वाला क्षेत्र एक शानदार परिदृश्य प्रस्तुत करता है। उल्लेखनीय रूप से, यह चार देशों- बांग्लादेश, भूटान, चीन और म्याँमार के साथ 4200 कि.मी. की अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करता है। साथ ही, यह सिलीगुड़ी कॉरिडोर या चिकन नेक के नाम से मशहूर एक संकरे रास्ते से शेष भारत से जुड़ जाता है। यह क्षेत्र पहाड़ियों और मैदानों का मिश्रण है। अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिज़ोरम, नगालैंड और सिक्किम को पहाड़ी क्षेत्र के रूप में वर्णित किया जा सकता है, जबकि असम काफी हद तक मैदानी इलाका है। स्थलाकृति और जलवायु हमेशा बड़ी बाधाओं के रूप में रही हैं और पूर्वोत्तर भारत देश का एक सुदूर भौगोलिक क्षेत्र बना रहा है।

लेखक सेवानिवृत्त आईएएस (भारतीय सांख्यिकी सेवा) के अधिकारी हैं। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण और मानव विज्ञान सर्वेक्षण के साथ काम किया है। वर्तमान में वे सामाजिक और मानवशास्त्रीय मुद्दों पर लेखन कर रहे हैं। ईमेल: biswas.aj@gmail.com

दूसरे शब्दों में, उत्तर पूर्वी जनजातीय अर्थव्यवस्थाएँ, मुख्यधारा की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से दूर हैं। इस आर्द्र और पहाड़ी इलाके में कृषि व्यवसाय और आजीविका का मुख्य स्रोत होने के नाते इसका इस्तेमाल केवल वृक्षारोपण फसलों को प्रोत्साहन के माध्यम से लूट की औपनिवेशिक नीति के कारण एक ही फसल के लिए प्रेरित करने, वर्षा की उच्च तीव्रता के प्राकृतिक कारक और जनजातीय संबंधों की सामाजिक - आर्थिक संरचना के लिए किया जाता रहा है।

फसलों की उन्नत खेती और कृषि में फसल विविधीकरण की विस्तृत शृंखला इस क्षेत्र के इतिहास में नहीं रही है। मानसून धान प्रमुख फसल रही है। वन उत्पाद भोजन और ईंधन के स्रोत रहे हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र में दो अलग-अलग प्रकार के कृषि के तरीके देखे जा सकते हैं (1) मैदानी इलाकों, घाटियों और हल्की ढलानों में कृषि और (2) अन्यत्र[2] झूम खेती। कहने की ज़रूरत नहीं है कि प्रतिबंधों के बावजूद पहाड़ी राज्यों - अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिज़ोरम और नगालैंड में झूम खेती प्रमुख कृषि पद्धति है। आजकल, कुछ राज्यों में झूम खेती के बजाय वृक्षारोपण के रूप में कृषि विकसित की गई है।

ब्रह्मपुत्र और बराक घाटियों के निचले इलाकों में, चावल की तीन कृषि पद्धतियों का पालन किया जाता है, अर्थात् साली खेती, आहू खेती और बाओ खेती। इन्हें एक ही वर्ष के विभिन्न मौसमों में अपनाया जाता है, जो बाढ़ क्षेत्र[3] में साल भर की खेती को दर्शाता है।

संस्कृति और परम्परा

ऊपर वर्णित प्रत्येक पद्धति की अपनी तकनीक और विधियाँ हैं। यह पर्यावरण और जलवायु की स्थितियों पर निर्भर करता है जिसमें किसान का पारम्परिक ज्ञान अगले मौसम के लिए भूमि, बीज, बुवाई का समय, रोपाई, कटाई, भंडारण और बीजों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह ज्ञान उन्हें उनके पूर्वजों से मौखिक परम्पराओं के माध्यम से प्रेषित किया गया है। इसीलिए उत्तर पूर्व भारत को पारम्परिक ज्ञान प्रणालियों का भंडार माना जा सकता है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र को विविध जनजातीय समुदायों, भाषाई और जातीय पहचानों का धारक होने के कारण अक्सर भारत के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में वर्णित किया जाता है। सामाजिक-सांस्कृतिक समानता, भाषाई आत्मीयता, जातीय संबद्धता और सामान्य क्षेत्र जैसे किसी कारक के आधार पर, इन जनजातीय समुदायों को बोरो, खासी, नागा, लुशी-कुकी, अरुणाचली और अन्य जैसे कुछ समूहों के तहत आसानी से रखा जा सकता है। उत्तर पूर्व भारत के जनजातीय समुदायों की अपनी पारम्परिक शासन प्रणाली है। यहाँ मुखियापन प्रचलित है, जबकि अन्य ग्राम परिषद द्वारा शासित होना पसंद करते हैं।

परम्परा उन सांस्कृतिक विशेषताओं को दिया गया नाम था, जिन्हें परिवर्तन की स्थिति में सौंपना जारी रखा जाना था, विचार किया जाना था, खत्म[4] नहीं किया जाना था। प्रत्येक समाज की अपनी सांस्कृतिक परम्परा, सामाजिक व्यवस्था, मूल्य, रीति-रिवाज़ और उत्सव के विभिन्न रंगीन तरीके होते हैं जो ज्यादातर कृषि से संबंधित होते हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं- अरुणाचल प्रदेश में मोल (तांगसा), मोपिन तथा सोलुंग (आदि), ओझोआले (वांचो), न्योकुम (न्यिशी), रेह (मिश्मी), लोस्सर (मोनपा), बूरी-बूट (पहाड़ी मिरिस); असम में माघ बिहू, बोहाग बिहू, अली-ऐ-लिगांग (मिशिंग), बैखो (राभा), बैशागु (दिमासा) और अन्य; नगालैंड में मोत्सू (एओ), नगाडा (रेंगमा), मोन्यू (फोम), नकन्युलम (चांग), सेक्रेनी (अंगामी) और सुहकरुहनी (चाकेनसांग); मणिपुर में लाई हराओबा नृत्य, थबल चोंगबा नृत्य, रासलीला और अन्य; मिज़ोरम में चापचर कुट, मीम कुट और चेराव (बाँस नृत्य); त्रिपुरा में खारची पूजा, गरिया पूजा, केर पूजा और अन्य; मेघालय में वंगाला महोत्सव (गारो), शाद सुक माईंसियम (खासी) और बेहदीनखलम (जयंतिया) और अन्य।

जनजातीय समुदायों के सामाजिक-राजनीतिक जीवन में, राजशाही और लोकतंत्र सैद्धांतिक रूप से सह-अस्तित्व में हैं। जनजातियों के सदस्य रिश्तेदारी और विवाह से एकजुट होते हैं। इस प्रकार राजनीतिक और घरेलू मामलों के बीच अंतर करना मुश्किल हो जाता है। वंश विभाजन जनजातीय समुदायों की राजनीतिक संरचना का मुख्य सिद्धांत है। हर जगह जनजातीय समुदाय अपने गैर-आदिवासी समकक्षों की तुलना में अपने समाजों में कहीं अधिक समतावादी स्त्री-पुरुष संबंधों के लिए जाने जाते हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र की स्थिति मोटे तौर पर इस बड़ी तस्वीर के अनुरूप है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र को विविध जनजातीय समुदायों, भाषाई और जातीय पहचानों का धारक होने के कारण अक्सर भारत के सांस्कृतिक केंद्र के रूप में वर्णित किया जाता है। उत्तर पूर्व भारत के जनजातीय समुदायों की अपनी पारम्परिक शासन प्रणाली है। यहाँ मुखियापन प्रचलित है, जबकि अन्य ग्राम परिषद द्वारा शासित होना पसंद करते हैं।

हाल में हुए बदलाव

जनजातीय समुदायों के सामाजिक-सांस्कृतिक तत्व स्थिर नहीं हैं; बल्कि वे विभिन्न कारणों से बदल रहे हैं। समय के साथ, वे विविध प्रकृति के बदलते परिवेश के अनुरूप ढल रहे हैं। तदनुसार, वे खुद को नई बदली हुई स्थिति के अनुकूल बनाने के प्रयास करते हैं, जो कि नई वैश्विक व्यवस्था में भागीदारी की उत्सुकता

तालिका 1: उत्तर पूर्व के चुनिंदा सामाजिक-आर्थिक संकेतक

राज्य	जनसांख्यिकीय		स्वास्थ्य		शिक्षा
	लिंग अनुपात (2011)[1]	ग्रामीण जनसंख्या (%) (2011)[1]	शिशु मृत्यु दर (%) (2013)[2]	स्वच्छता सुविधाएँ (%)(2011)[3]	साक्षरता दर (%) (2011)[1]
1	2	3	4	5	6
अरुणाचल प्रदेश	938	77.33	32	61.97	65.38
असम	958	85.92	54	64.89	72.19
मणिपुर	992	69.79	10	89.30	79.21
मेघालय	989	79.92	47	62.91	74.43
मिज़ोरम	976	48.49	35	91.91	91.33
नगालैंड	931	71.03	18	76.52	79.55
सिक्किम	890	75.03	22	87.20	81.42
त्रिपुरा	960	73.03	26	86.04	87.22
कुल मिलाकर देश संकेतक	940	68.84	40	46.92	74.04

स्रोत: 1. भारत सरकार, 2011; 2. एसआरएस, 2014; 3. परिवारों के प्रतिशत में मापा गया। भारत सरकार (2008-09) भारत में आवास की स्थिति और सुविधाएँ (65वां दौर, एनएसएसओ रिपोर्ट संख्या 535)

से बहुत स्पष्ट है। यह लिंगानुपात, शिक्षा, शिशु मृत्यु दर या स्वच्छता जैसे सामाजिक आर्थिक संकेतकों से स्पष्ट है जो पिछड़ेपन या कम विकास को दूर करने की आकांक्षा की धारणा को प्रकट करता है (तालिका:1)। इसके अलावा, मानक नमूना सर्वेक्षणों[5] के हालिया आंकड़ों से पता चलता है कि निर्णय लेने में महिलाओं की भागीदारी इस क्षेत्र में दक्षिणी राज्यों[6] की तुलना में भी अधिक थी।

2011 की जनगणना के अनुसार, लिंगानुपात मणिपुर (992) में सबसे अधिक है, इसके बाद मेघालय (989), मिज़ोरम (976) और सिक्किम (890) में सबसे कम है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत सबसे अधिक असम (85.92) में और सबसे कम मिज़ोरम (48.49) में है। शिशु मृत्यु दर (कुल) असम (54 प्रतिशत) में सबसे अधिक दर्ज की गई, इसके बाद मेघालय (47 प्रतिशत) और मिज़ोरम (35 प्रतिशत) का स्थान रहा है। यह मणिपुर (10 प्रतिशत) में सबसे कम है।

यहाँ के आवासों में स्वच्छता सुविधाओं के आंकड़े भी मुख्य भूमि के कई हिस्सों की तुलना में बेहतर स्थिति को दर्शाते हैं। ग्रामीण क्षेत्र पर निर्भरता तालिका 1 के आंकड़ों से स्पष्ट है।

क्षेत्र के समग्र विकास के लिए एक और संकेतक, चाहे वह ज़िला हो या राज्य, सतत विकास लक्ष्य (एसडीजी) को दर्शाता है, 2018 से उपलब्ध कराया गया है। नीति आयोग 2018 से सालाना एसडीजी इंडिया इंडेक्स प्रकाशित कर रहा है। नीति आयोग का तीसरा संस्करण- एसडीजी इंडिया इंडेक्स (2020-21) प्रत्येक राज्य और केंद्रशासित प्रदेश के लिए 16 सतत विकास लक्ष्यों पर लक्ष्य-वार स्कोर की गणना करता है, और लक्ष्य 17 पर गुणात्मक मूल्याँकन, 17 मापदंडों को कवर करता है।

कुल मिलाकर राज्य और केंद्रशासित प्रदेश के स्कोर, 16 सतत विकास लक्ष्यों में इसके प्रदर्शन के आधार पर उप-राष्ट्रीय इकाई के समग्र प्रदर्शन को मापने के लिए लक्ष्य-वार स्कोर से उत्पन्न होते हैं। ये स्कोर 0-100 के बीच होते हैं, राज्यों / केंद्रशासित प्रदेशों को उनके स्कोर के आधार पर आकांक्षी (स्कोर 0-49), निर्वाहक (स्कोर 50-64), फ्रंट रनर (65-99) और लक्ष्य प्राप्तिकर्ता (स्कोर 100) के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। राज्यों में, 2020-21 में फ्रंट रनर श्रेणी में उत्तराखंड, गुजरात, महाराष्ट्र, मिज़ोरम, पंजाब, हरियाणा और त्रिपुरा शामिल हैं। आश्चर्यजनक रूप से, उत्तर पूर्वी क्षेत्र के दो राज्यों मिज़ोरम और त्रिपुरा ने 2020-21 में सर्वोच्च रैंक, यानी फ्रंट रनर श्रेणी हासिल की।

नीति आयोग द्वारा विकसित पूर्वोत्तर क्षेत्र (एनईआर) ज़िला एसडीजी सूचकांक 2021-22 के साथ पूर्वोत्तर क्षेत्र में सतत विकास लक्ष्य की उपलब्धि पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। सूचकांक को 84 संकेतकों से बनाया गया है और इसमें पूर्वोत्तर क्षेत्र के आठ राज्यों के 15 वैश्विक लक्ष्यों, 50 सतत विकास लक्ष्यों और 103 ज़िलों को शामिल किया गया है। सूचकांक बड़ी कमियों की पहचान करने में मदद करेगा और क्षेत्र में सतत विकास लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में तेज़ी से प्रगति के लिए उपायों को सूचित करेगा। नीति आयोग एनईआर ज़िला एसडीजी सूचकांक, 2021-22 में ज़िलेवार समग्र प्रदर्शन देखा जा सकता है। 103 ज़िलों के लिए स्कोर पूर्वी सिक्किम

वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं का जनजातीय समुदायों की संस्कृति पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण प्रत्येक समाज पर एक सजातीय उपभोक्तावादी संस्कृति और मूल्य प्रणाली थोपता है। गतिकी का नियम हर समाज पर सार्वभौमिक रूप से लागू होता है और जनजातीय समाज कोई अपवाद नहीं है।

(सिक्किम) में 75.87 से किफिर (नगालैंड) में 53 तक है। फ्रंट रनर श्रेणी में 64 ज़िले और निर्वहन श्रेणी में 39 ज़िले हैं। सिक्किम और त्रिपुरा के सभी ज़िले फ्रंट रनर श्रेणी में आते हैं।

वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं का जनजातीय समुदायों की संस्कृति पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। वैश्वीकरण प्रत्येक समाज पर एक सजातीय उपभोक्तावादी संस्कृति और मूल्य प्रणाली थोपता है। गतिकी का नियम हर समाज पर सार्वभौमिक रूप से लागू होता है और जनजातीय समाज कोई अपवाद नहीं है।

इस प्रकार, जनजातीय समुदायों के स्वदेशी और बहिर्जात दोनों तरह की परिवर्तन की ताकतों के संपर्क में आने से जनजातीय समुदायों की जीवन शैली और संस्कृति पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

यद्यपि कृषि, विशेष रूप से स्थानांतरित खेती, उनमें से कई के लिए आजीविका का एक प्रमुख साधन बनी हुई है, उनकी आजीविका का साधन, निर्वाह कृषि आय से विविध आधुनिक बाजार-उन्मुख रोज़गार और अर्थव्यवस्था में बदल जाता है। विभिन्न विकास पहलों के परिणामस्वरूप उपलब्ध कराए जाने वाले विभिन्न व्यवसायों के संदर्भ में आय के स्रोतों में विविधता आई है। आधुनिक शिक्षा आजीविका के साधनों में परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह परिवर्तन व्यवस्थित रूप से प्रति व्यक्ति आय और शैक्षिक स्तर में वृद्धि के साथ जुड़ा हुआ है। इनके अलावा अधिक विवरण की कोई गुंजाइश नहीं होने के कारण, 'पिछड़े और कम विकसित' शब्द के बारे में परित्याग कथन के अंकुरण को महसूस किया जा सकता है, और उत्तर पूर्वी क्षेत्र के जनजातीय समुदायों पर इसका प्रभाव गहराई से देखा जा सकता है। ■

सन्दर्भ

1. जनजातीय कार्य मंत्रालय, भारत सरकार।
2. भारत सरकार, 1981।
3. हजारिका, मंज़िल- मैन एण्ड एन्वायर्नमेंट इन नॉर्थईस्ट इंडिया: ऐन ईकोलॉजिकल परस्पैक्टिव
4. क्लाउड लेवी-स्ट्रॉस
5. राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण
6. आईआईपीएस एण्ड ओआरसी मैक्रो, 2007

- अंसारी, महमूद- ट्राईबल इकोनिमिज़ इन असम: ए स्टडी ऑफ़ नॉर्थईस्टर्न इंडिया
- भारत की जनगणना- 2011 की जनगणना
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार। भारत की जनजातीय संस्कृति
- नीति आयोग- नॉर्थईस्टर्न रीजन डिस्ट्रिक्ट एसडीजी इंडेक्सएण्ड डैशबोर्ड, बेसलाइन रिपोर्ट 2021-22
- नीति आयोग- एसडीजी इंडिया इंडेक्स एण्ड डैशबोर्ड, बेसलाइन रिपोर्ट 2020-21
- सेनगुप्ता, सार्थक- ट्राईबल सिचुएशन इन नॉर्थईस्ट इंडिया
- श्रीवास्तव, विनय कुमार- सोश्यो-इकोनोमिक कैरेक्टरिस्टिक्स ऑफ़ ट्राईबल कम्युनिटीज़ दैट काल दैमसैल्व्स हिंदू
- जाक्सा, वर्जिनियस- ट्राईब्स एण्ड सोश्यो एक्सक्लूज़न

जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के संग्रहालय

केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय ने संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) के सहयोग से 'जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के संग्रहालय बनाने के सिद्धांतों और सिफारिशों' पर हाल ही में नई दिल्ली में दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का समन्वय संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) द्वारा किया गया था, जो पिछले कई वर्षों से मंत्रालय के साथ विभिन्न विकास परियोजनाओं पर काम कर रहा है।

यूनेस्को के निदेशक और प्रतिनिधि श्री एरिक फाल्ट ने अपने संबोधन में जनजातीय स्वतंत्रता सेनानियों के संग्रहालयों को विकसित करने के इस अनूठे प्रयास के लिए भारत सरकार की सराहना की क्योंकि यह पहल दुनिया में अपनी तरह की पहली होगी। उन्होंने कहा कि कार्य जटिल है। श्री एरिक ने विभिन्न सिफारिशें दीं कि कैसे परियोजना की एकता और जनजातीय समुदायों के स्वामित्व को प्राथमिक हितधारकों के रूप में जनजातीय समुदायों को चुनकर और उन्हें अवधारणा, डिजाइन और मानस दर्शन के विकास में शामिल करके सुनिश्चित किया जा सकता है।

जनजातीय कार्य मंत्रालय के सचिव श्री अनिल कुमार झा ने कहा कि ये संग्रहालय स्वतंत्रता आंदोलनों में जनजातियों के योगदान को पहचानने और उनकी जनजातीय सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए हैं। उन्होंने कहा कि ये संग्रहालय उन

गुमनाम नायकों की स्मृति में स्थापित किए जा रहे हैं जिन्होंने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में योगदान दिया। कार्यशाला का उद्देश्य इन संग्रहालयों के विकास के लिए एक व्यवस्थित दृष्टिकोण विकसित करना और प्रमुख अधिकारियों को इन संग्रहालयों की स्थापना में आवश्यक समावेशी प्रक्रियाओं के लिए प्रशिक्षित करना है।

कार्यशाला में जनजातीय अनुसंधान संस्थानों के निदेशक और प्रतिनिधि, भारतीय मानव विज्ञान सर्वेक्षण, राष्ट्रीय स्तर की समिति के सदस्य और राष्ट्रीय मानव संग्रहालय और भारतीय वन प्रबंधन संस्थान के प्रमुख विशेषज्ञ शामिल थे।

(स्रोत-पत्र सूचना कार्यालय)